प्रेस विज्ञप्ति

नई दिल्ली, 9 फरवरी, 2009 :

एक नए और अनूठी नवीनता भरे अभियान – वन मिलियन कैंम्पेन को दुनिया के 30 से अधिक देशों में आज लांच किया गया, जिनमें बांग्लादेश, चीन, कोस्टा रीका, फ्रांकोफोन अफ्रीका, हांगकांग, भारत, इंडोनेशिया, मलेशिया, मंगोलिया, नेपाल, फिलीपींस, दक्षिण अफ्रीका, श्रीलंका, युगांडा, ग्रेट ब्रिटन और अमेरिका भी शामिल हैं। इस अभियान का उद्देश्य महिलाओं द्वारा अपने शिशुओं को स्तनपान कराने में उन्हें समर्थन प्रदान करना है।

यह **कैम्पेन** अनूठा है क्योंकि यह शिशुओं को स्तनपान कराने में महिलाओं को समर्थन देने के लिए कार्रवाई करने के सिलसिले में वेबसाइट– www.onemillioncampaign.org पर याचिका पर हस्ताक्षर करने से लेकर कम से कम एक महिला को स्तनपान में समर्थन देने की प्रतिज्ञा करने जैसी व्यक्तिगत कार्रवाई के लिए दुनिया भर की जनता को एकजुट करता है।

इंडिया लांच के अवसर पर मुख्य अतिथि केंद्रीय पंचायती राज मंत्री श्री मणि शंकर अय्यर ने श्रोताओं को संबोधित करते हुए ऐसे स्तनपान–हितैषी समुदायों के निर्माण की जरूरत पर बल दिया, जहां महिलाओं को स्तनपान में समर्थन देने की प्रक्रिया में पंचायती राज संस्थाओं को शामिल किया जाएगा। समर्थन देने की इस प्रक्रिया में सही सूचना का प्रचार–प्रसार भी शामिल है।

नित–नए वैज्ञानिक प्रमाण दर्शाते हैं कि शिशु के स्वस्थ और जीवित रहने में स्तनपान का अत्यधिक महत्व होता है। महिलाओं को स्तनपान बंद कराने और उन्हें अपने शिशुओं को मिल्क फॉर्मूला (पाउडर दूध) देने के लिए विवश किया जाता है। चाहे परिवार या अस्पताल में संतान को जन्म देना हो या कार्यस्थल, महिलाओं को स्तनपान कराने के लिए अपेक्षित समर्थन नहीं मिलता। इससे भी अहम बात यह है कि बढ़ते वाणिज्यीकरण के माहौल में मिल्क फॉर्मूला अपनाने पर भारी जोर दिया जाता है। इस प्रकार, विश्व में दस्तक देने के लिए भारी आपदाएं इंतजार कर रही हैं।

यह समस्या **बहुत गंभीर** है। दुनिया में प्रति मिनट 200 माताएं शिशुओं को जन्म देती हैं। उन्हें अपने शिशुओं को स्तनपान कराने और उसे जारी रखने के लिए समर्थन की जरूरत है। प्रतिवर्ष जन्म लेने वाले लगभग 135 मिलियन बच्चों में से सिर्फ 64 मिलियन बच्चे जन्म के एक घंटे के भीतर स्तनपान शुरू करते हैं और 71 मिलियन बच्चे ऐसा नहीं कर पाते। लगभग 48 मिलियन महिलाएं पहले छह माह के दौरान सफलतापूर्वक एक्सक्लुसिव स्तनपान कराती हैं और 87 मिलियन ऐसा नहीं कराती हैं। इसके कारण जटिल हैं। स्तनपान सफलतापूर्वक कराने में महिलाओं की क्षमता को अनेक कारण प्रभावित करते हैं : परम्परा, मिथक, परिवार एवं समाज में स्थिति, कार्य का बोझ, उसके शरीर में आत्मविश्वास, सेक्सुअलिटी (कामभावना), आर्थिक जरूरतें, श्रम कानून, घरेलू एवं कार्यस्थल पर हिंसा तथा उत्पीड़न, सहायता सेवाओं की उपलब्धता, शिशु आहार निर्माताओं द्वारा वाणिज्यिक स्तर पर विज्ञापन इत्यादि। इन कारणों से दुनिया भर में महिलाएं अपने शिशुओं को इष्टतम स्तनपान नहीं करा पातीं। यह अभियान दुनिया भर में महिलाओं और परिवारों को अपनी कठिनाइयां और जरूरतें अभिव्यक्त करने के बारे में एक मंच प्रदान करेगा। यद्यपि कई ब्लॉग्स मौजूद हैं, लेकिन यह पहल कार्रवाई की पेशकश करेगी।

इस **कैम्पेन** की पहल **इंटरनेशनल बैबी फूड एक्शन नेटवर्क–एशिया (आईबीएफएएन–एशिया)** ने की है। यह अभियान पिछले साल घटी उन त्रासदियों के मद्देनजर चलाया जा रहा है, जिसमें चीन में दूषित शिशु दुग्ध

ONE
MILLION
CAMPAIGN
Support Women to Breastfeed
A global people's movement to demand protection, promotion and support for women to breastfeed

WORLD BREASTFEEDING MOVEMENT

फॉर्मूला के सेवन के चलते 3,00,000 शिशुओं को गुर्दे की असाध्य बीमारी हो गई थी। इनमें कई शिशुओं की उम्र एक साल से भी कम थी। ये त्रासदियां रोकी जा सकती थीं। अगर महिलाओं को अपने शिशुओं को स्तनपान कराने के लिए समर्थन दिया जाए तो इन महाविपत्तियों को रोका जा सकता है।

चाहे इस शिशु दुग्ध फॉर्मूला में मेलऐमीन पदार्थ है या नहीं, लेकिन इस आशय के अनेक प्रमाण हैं कि यह पाउडर फॉर्मूला एक रोगाणुहीन उत्पाद (स्टराइल प्रोडक्ट) नहीं है। इसमें जानलेवा पैथोजेनिक माइक्रोओर्गेनिजम्स, जैसे ई. साकाझाकी और साल्मोनेल्ला का तात्विक दूषण है, जिससे नवजात शिशुओं की जान को खतरा पैदा हो सकता है। दुनिया भर के बाजारों से नेसले और मीड जॉनसन जैसी कंपनियों को अपने उत्पाद वापस मंगाने पड़े थे क्योंकि उनमें इसी तरह का दूषण था। डब्ल्यूएचओ (विश्व स्वास्थ्य संगठन) ने इसे गंभीरता से लिया है और कुछ दिशा–निर्देश जारी किए हैं। इन्हें वेबसाइट– http://www.who.int/foodsafety/micro/jemra/assessment/esakazakii/en/ पर देखा जा सकता है। दूषण के अलावा, इस बात के पर्याप्त प्रमाण हैं कि शिशुओं के लिए बेहतरीन आहार के रूप में कोई भी शिशु दुग्ध आहार फॉर्मूला स्तनपान के समतुल्य नहीं हो सकता। इसके अतिरिक् त, शिशु दुग्ध आहार के खतरे अच्छी तरह ज्ञात हैं, और इसीलिए सुझाव दिया जाता है कि महिलाओं को अपने शिशुओं को इष्टतम स्तनपान कराने में समर्थ होने के लिए जबरदस्त समर्थन दिया जाना चाहिए।

इस **कैम्पेन** की पहली याचिका विश्व नेताओं को संबोधित की गई है और मांग की गई है कि वे स्तनदुग्ध के विकल्पों की मार्केटिंग के लिए अंतर्राष्ट्रीय आचार संहिता सख्ती से लागू करना सुनिश्चित करें, कार्यस्थल पर कार्य–समय के बीच में शिशुओं की देखभाल के लिए पर्याप्त समय का अवकाश तथा क्रेशेज सुविधा प्रदान करते हुए उसे महिला एवं बाल–हितैषी बनाएं, और स्तनपान की सुरक्षा, उसे बढ़ावा एवं समर्थन देने के लिए देश बजट निर्धारित करें। यह याचिका कैम्पेन की वेबसाइट– www.onemillioncampaign.org पर देखी जा सकती है।

इस **कैम्पेन** को आईबीएफएएन के साझीदार संगठनों, जैसे वर्ल्ड एलायंस फोर ब्रेस्टफीडिंग एक्शन की ओर से सक्रिय समर्थन दिया जा रहा है।

अधिक जानकारी के लिए कृपया संपर्क करें :
डा. अरुण गुप्ता, मोबाइल– 989976306,
राधा होल्ला, मोबाइल– 9810617188,
डा. जे पी डडगधीच, मोबाइल– 9873926751